मधुबन-7

1. हे प्रभो! वरदान दो तुम

पाठ-बोध

1. (क) (ii) ईश्वर (ख) (iii) विपरीत (ग) (i) विचलित न होऊँ
(घ) (i) अथाह संकट-सागर (ङ) (iv) उपरोक्त सभी।

2. (क) या कि अपना सिर झुकाऊँ-
यह नहीं मैं चाहता हूँ
प्रार्थना है एक मेरी, शक्ति देना-
अथाह संकट-सागरों को
हँसते-हँसते तैर जाऊँ।

(ख) व्यथित होकर संकटों से
भीख करुणा की न माँगू।

(ग) प्रार्थना केवल यही है
भार सहता ही चलूँ मैं-
सुख में तुम्हें भूलूँ नहीं मैं।

(घ) जब कभी भी मिल न पाये
तेरी करुणा का सहारा,
दीन बनकर मैं न हारूँ
भयभीत होकर मुँह न मोड़ूँ।

3. (क) हमें विपरीत परिस्थितियों में अटल रहना चाहिए।

(ख) मुसीबत के समय कवि प्रभु से यह प्रार्थना कर रहा है कि वे उसे ऐसा वरदान दें जिससे वह विषम परिस्थितियों में दु:खी होकर विचलित न हो। कभी भी दया की भीख न माँगनी पड़े और मुसीबत का डटकर सामना करे।

(ग) प्रभु की दया न मिलने पर कवि यह इच्छा प्रकट करता है कि उसे कभी दीन बनकर हारना न पड़े, डटकर पीछे न हटना पड़े और लाचार होकर रुकना न पड़े।

(घ) 'अथाह संकट-सागरों' को कवि हँसते-हँसते पार करना चाहता है।

(ङ) सुख के समय हमें कभी ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए।

(च) इस कविता से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें विषम परिस्थितियों में धैर्य और दृढ़ता से काम लेना चाहिए तथा सुख के समय ईश्वर को नहीं भूलना चाहिए।

4.

'अ'	'ब'
विचलित	अस्थिर
व्यथित	पीड़ित
अनुकम्पा	दया
धोखा	छल-कपट
रुकना	ठहरना
विवश	लाचार
भयभीत	डरा हुआ

भाषा-बोध

5. रोते-रोते — **हँसते-हँसते** असहनीय — **सहनीय**
प्रशंसा — **उपहास** सबल — **निर्बल**
सुख — **दुःख** निर्भीक — **भयभीत**
पराजय — **विजय** शाप — **वरदान**

6. प्रभो, करुणा, हृदय, दीन, अटल, दुर्बल, अनिष्ट, त्राहि माम्, द्वारा, उपहास।

7. अनिष्ट — **हानि, नुकसान।** करुणा — **दया, कृपा।**
व्यथित — **पीड़ित, दुःखी।** अटल — **स्थिर, अडिग।**
थमना — **ठहरना, रुकना।**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

2. हिम्मत और जिंदगी

पाठ-बोध

1. (क) (i) समुद्र में डूबने का खतरा उन्हीं के लिए है।
(ख) (ii) 13 वर्ष (ग) (i) हिम्मत (घ) (ii) सिंह का
(ङ) (iv) रामधारी सिंह 'दिनकर'।

2. (क) अधिकांश (ख) उपवास और संयम (ग) हिम्मत
(घ) हिस्सा (ङ) साधारण जीव।

3. (क) साहसी मनुष्य बिल्कुल निडर, बिल्कुल बेखौफ होता है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं?
(ख) साहस की जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है।
(ग) 'निडर' में 'नि' तथा 'बेखौफ' में 'बे' उपसर्ग लगा है।
(घ) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक का नाम रामधारी सिंह 'दिनकर' है।

4. (क) जिंदगी का असली आनन्द उनके लिए है, जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं।
(ख) अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने बाप के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अबकर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था।
(ग) महाभारत में देश के प्राय: अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई; क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था।
(घ) क्रान्ति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न ही अपनी चाल को पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।
(ङ) अर्नाल्ड बेनेट के अनुसार जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चय के समय वह साहस से काम नहीं ले सकता; जिंदगी की चुनौती को कबूल नहीं कर सकता, वह सुखी नहीं हो सकता।

भाषा-बोध

5. अमृत — **पीयूष, सुधा** समुद्र — **सागर, जलधि**
हस्ती — **मतंग, मदकल** आम्र — **आम, रसाल**
दुनिया — **संसार, जगत** फूल — **पुष्प, सुमन**

6. शीतलता — **शीतल + ता** आनंदित — **आनंद + इत**
व्यावहारिक — **व्यवहार + इक** सफलता — **सफल + ता**।

7. संयम — **संयमी** हिम्मत — **हिम्मतदार** उपेक्षा — **उपेक्षित**
अपेक्षा — **अपेक्षित** ललिमा — **लाल** सुख — **सुखी**।

8. (क) असली मजा किसमें है?
(ख) झुंड में चलना और झुंड में चरना किसका काम है?
(ग) मोती लेकर कौन बाहर आएँगे?
(घ) साहस की जिंदगी कैसी होती है?

9. जीवन — **मृत्यु** संतुष्ट — **असंतुष्ट** गरीब — **अमीर**
कायर — **बहादुर** धूप — **छाँव** संयोग — **असंयोग**
सुख — **दु:ख** गुण — **दोष**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

3. सोना हिरणी

पाठ-बोध

1. (क) (ii) हिरणी का, (ख) (iii) कच्ची सब्जी, (ग) (i) कुतिया का,
(घ) (i) बिल्ली का, (ङ) (iii) बद्रीनाथ।

2. प्रस्तुत पंक्ति में लेखिका ने लिखा है कि सोना उनकी उस निगाह को पहचानती थी जिसमें उसके लिए प्रेम झलकता था और उन हाथों को भी जानती थी, जिन्होंने अत्यधिक प्रयत्न करके उस समय उसके मुँह में दूध की बोतल की निप्पल लगाई थी।

3. (क) प्रशान्त वनस्थली में मृग-समूह शिकारियों की आहट से चौंककर भागा, तो सोना की माँ सद्य:प्रसूता होने के कारण भागने में असमर्थ रही। सद्य: जात मृग शिशु तो भाग नहीं सकता था। अत: मृगी माँ ने अपनी सन्तान को सुरक्षित रखने के प्रयास में प्राण दे दिए। इस तरह सोना अपनी माँ से बिछुड़ गई।
(ख) सोना एक हिरणी थी जिसे लेखिका महादेवी वर्मा ने पाला था।
(ग) छात्राएँ सोना का सजाव-शृंगार कुमकुम का टीका लगाकर करती थीं।
(घ) सोना को छोटे बच्चे इसलिए पसन्द थे, क्योंकि उसे उनके साथ खेलने का अधिक अवसर रहता था। वे पंक्तिबद्ध खड़े होकर सोना-सोना पुकारते और वह उनके ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती थी।
(ङ) सोना को कच्ची सब्जियाँ और बिस्कुट बहुत अधिक पसन्द था।
(च) लेखिका के बद्रीनाथ से लौटने पर उन्हें सोना की मृत्यु का दु:खद समाचार मिला।

4. (क) लेखिका ने कुत्ते, हिरण और बिल्ली पाले हुए थे।
(ख) कुत्ता स्वामी का स्नेह पाते ही खुश हो जाता है और उसके पास आकर बैठ जाता है।
(ग) हिरण पर क्रोध किया जाए तो वह शान्ति एवं विन्मयता से देखता रहता है।
(घ) हिरण का पालने वाले से डरना कठिन होता है।

भाषा-बोध

5. छात्र स्वयं करें।

6. (क) स्वर्ण – **सोना** (ख) माता – **माँ** (ग) सत्य – **सच**
(घ) कज्जल – **काजल** (ङ) अन्धकार – **अँधेरा** (च) दुग्ध – **दूध**।

7. (क) नाश्ता, (ख) परिचित, (ग) शैशवावस्था, (घ) छात्रावास।

8. विस्मय – **विस्मयबोधक** स्नेह – **स्नेहपूर्ण**
तन्मय – **तन्मयता** दृष्टि – **दृष्टिकोण**।

9. (क) भक्तिन (ख) बिस्कुट (ग) मेस (घ) स्निग्ध।

10. सेवक – **राजा** परिचित – **अपरिचित**
निकट – **दूर** सभीत – **निडर**।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

4. न्यायप्रिय शासक

पाठ-बोध

1. (क) (iv) माघ पूर्णिमा
(ख) (iii) उन्होंने गंगा-घाट के किनारे बने झोंपड़ों में आग लगा दी।
(ग) (ii) करुणा,
(घ) (i) यदि दण्ड नहीं दिया गया तो धन और सत्ता के घमण्ड में चूर लोग गरीब और असहाय जनता का जीना मुश्किल कर देंगे।
(ङ) (ii) महारानी साधारण मनुष्य की भाँति किसी झोंपड़ी में एक वर्ष तक परिश्रमपूर्वक जीवन-यापन करें।

2. प्रस्तुत गद्यांश में काशी नरेश कहते हैं कि यह नगरी सत्यवादी हरिश्चन्द्र की नगरी है, सत्य को बचाने के लिए हरिश्चन्द्र जी ने खुद को बेच दिया था और करुणा आज तुमने उस काशी का अपमान करके बुरा कर्म किया है। गरीब लोगों का भला करने के बजाय तुमने उनके घर जलाकर हमें भी शर्मिन्दा किया है। इसके लिए तुम्हें विशेष दण्ड के रूप में इसी समय राजमहल को छोड़ना होगा।
तुम्हें साधारण मनुष्य की तरह किसी झोंपड़ी में एक वर्ष तक परिश्रम करके जीवन-यापन करना होगा। परिश्रम से तपकर ही तुम राजमहल में दुबारा आ सकोगी।

3. (क) उपरोक्त कथन दासी बेला ने महारानी करुणा से कहा।

(ख) उपरोक्त कथन से महारानी का घमण्ड प्रकट होता है।

(ग) महारानी ने सर्दी से बचने के लिए झोंपड़ों में आग लगाने का सुझाव दिया।

(घ) महारानी की आज्ञा से गरीब लोग वहाँ से हट गए थे इसलिए उनके झोंपड़े खाली पड़े थे।

4. (क) रनिवास में महारानी एवं उसकी दासियों के मध्य माघ पूर्णिमा पर्व के बारे में चर्चा हो रही थी।

(ख) महारानी को घाट का प्रबन्ध इसलिए अच्छा लगा, क्योंकि जैसा महारानी ने कहा था प्रधान ने ऐसा ही प्रबन्ध कर दिया था।

(ग) स्नान के बाद महारानी ने चम्पा को लकड़ी लाकर आग जलाने का आदेश दिया।

(घ) महारानी की आज्ञा से गरीबों के झोंपड़े जला दिए गए थे। गरीबों पर हुए इस अत्याचार के विरुद्ध महाराज से न्याय माँगा जा रहा था।

(ङ) काशी नरेश ने महारानी को एक वर्ष तक साधारण मनुष्य की भाँति परिश्रमपूर्वक जीवन-यापन करने का दण्ड दिया। इस प्रकार काशी नरेश ने न्याय किया।

भाषा-बोध

5. आग – **अग्नि** सर्दी – **सर्द** लकड़ी – **लागुड़** दाँत – **दन्त**

6. पूर्णिमा – **पूनम** दण्ड – **डंडा** कार्य – **काज** एकान्त – **निर्जन**

7. **देशज**—भागीदार, अवधि, साधारण।
विदेशज—शायद, शिकायत, सजा, जमीन, नजरें।

8. (क) महाराज **की** जय हो।

(ख) महारानी करुणा साधारण वेश **में** महल **से** जाती हैं।

(ग) तुमने उस काशी **का** अपमान किया है।

(घ) इस अपराध **का** तुम्हें दण्ड अवश्य मिलेगा।

9. **घाट**—महारानी गंगा-**घाट** पर नहाने गई।
घाटा—रमेश को व्यापार में **घाटा** हो गया।
घात—चोर को पकड़ने के लिए पुलिस **घात** लगाए बैठी है।
जीन—विराट ने घोड़े पर **जीन** चढ़ाई।
जीना—कर्जा होने से रोहित का **जीना** मुश्किल हो गया।
जीना (सीढ़ी)—वृद्ध के पैरों में दर्द होने के कारण उनसे एक भी **सीढ़ी** नहीं चढ़ गया।
जल—बहुत ठण्डा **जल** है।
जाल—चूहे ने **जाल** काट दिया।
जला—महारानी की आज्ञा से झोंपड़ी **जला** दी गई।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

क्रियाकलाप

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

5. यह कदम्ब का पेड़

पाठ-बोध

1. (क) (i) कदम्ब के पेड़ के (ख) (i) धीरे-धीरे बाँसुरी बजाना
(ग) (i) मुन्ना राजा (घ) (iii) फैलाकर
(ङ) (iv) सुभद्रा कुमारी चौहान।

2. (क) इस कविता का कवयित्री का नाम सुभद्रा कुमारी चौहान है।
(ख) इस कविता में बालक कन्हैया बनने की कल्पना कर रहा है।
(ग) बालक की बंसी की आवाज सुनकर माँ काम छोड़कर उसे देखने आतीं।
(घ) माँ बंसी की धुन सुनकर इसलिए खुश हो जाती, क्योंकि बालक कन्हैया की तरह बंसी बजाने की कल्पना कर रहा है।

3. (क) कन्हैया (ख) बाँसुरी (ग) उतरकर
(घ) घबराकर, खोलती, खुश (ङ) कदम्ब, अगर, यमुना-तीरे।

4.

'अ'	'ब'
विनती	प्रार्थना
हृदय	दिल
आँचल	साड़ी का पल्ला
कन्हैया	कृष्ण
विकल	व्यथित

5. (क) बालक कदम्ब के पेड़ की नीची डाली पर चढ़कर कृष्ण की तरह बाँसुरी बजाना चाहता है।
(ख) जब बालक सबसे ऊपर की टहनी पर चढ़ जाता है और बहुत बुलाने पर भी नहीं उतरता तो माँ का हृदय विकल हो जाता है।
(ग) बंसी के स्वर में बालक अम्मा-अम्मा कहकर अपनी माँ को बुलाना चाहता है।
(घ) माँ ईश्वर से बालक को पेड़ से नीचे उतरने के लिए प्रार्थना करती है।
(ङ) माँ बालक को पेड़ से नीचे उतारने के लिए नए खिलौने, माखन, मिसरी और दूध-मलाई का प्रलोभन देती है।

भाषा-बोध

6. वाली — **डाली** बजाता — **बुलाता** आता — **जाता**
आ जा — **राजा** नीचे — **मीचे**।

7. माँ — **माता, जननी** यमुना — **कालिन्दी, अर्कजा**
पेड़ — **वृक्ष, विटप** दूध — **क्षीर, पय**।

8. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—कदम्ब, यमुना, कन्हैया, बाँसुरी।
जातिवाचक संज्ञा—पेड़, माँ, डाली।

9. अम्मा-अम्मा— **योजक चिन्ह (-)**
"नीचे आ जा" — उद्धरण चिन्ह (" ")

सुन मेरी बंसी को माँ, — अल्प विराम (,)
नीचे उतरो मेरे भैया! — विस्मयादिबोधक चिन्ह (!)

10. राजा — **सेवक** चढ़ना — **उतरना** ऊपर — **नीचे**
हँसना — **रोना** पसारना — **सिकोड़ना**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

6. यह मेरा, यह मीत का

पाठ-बोध

1. (क) (ii) हार्ड टास्क मास्टर, (ख) (i) मीत, (ग) (iii) भिक्षुक के रूप में,
(घ) (ii) सौ मुद्राएँ, (ङ) (i) व्यापारी का पुत्र।

2. (क) हार्ड टास्क मास्टर (ख) दिल (ग) विद्वान (घ) व्यापारी
(ङ) पूर्णिमा, याचकों (च) सुखी (छ) पढ़ते, पढ़ाते।

3. इस पाठ के लिए 'मित्र की सहायता' शीर्षक सबसे उपयुक्त होगा, क्योंकि दोनों मित्रों ने नि:स्वार्थ भाव से एक-दूसरे की सहायता की है।

4. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✗, (ङ) ✓।

5. (क) लेखक ने अपने शिक्षक को 'हार्ड टास्क मास्टर' इसलिए कहा क्योंकि उनके डर से सभी विद्यार्थी रोज का पाठ रोज तैयार कर लेते थे।

(ख) धनी बालक में यह विशेष गुण था कि उसके पास अपने मित्र के लिए एक दिल था। इसी से उसने अपने मित्र के खाने-पहनने, पढ़ाई-लिखाई के सारे खर्चे की व्यवस्था अपने पिता से कराई थी।

(ग) मित्र की निर्धनता देखकर धनी मित्र ने अपने पिता से कहा कि यदि दरिद्रता के कारण मेरा मीत पढ़-लिख नहीं सकता तो मैं भी नहीं पढ़ूँगा। मैं भी उसकी तरह अनपढ़ और दरिद्र ही रहूँगा।

(घ) निर्धन मित्र अपने धनवान मित्र की मदद से नाना विद्याओं के प्रकाण्ड विद्वान के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। उसकी ख्याति सुनकर उस राज्य के राजा ने अपने दरबार में उसका स्वागत किया और मन्त्री बना दिया।

(ङ) एक रात डाकुओं ने व्यापारी मित्र की सारी सम्पत्ति लूट ली और जान बचाने के लिए जब उसके परिवार के लोग घर से बाहर निकल आए, तब डाकुओं ने उसका घर भी फूँक दिया। इसी शोक में उसके पिता स्वर्ग सिधार गए और उसका व्यापार नष्ट हो गया।

(च) मन्त्री ने अपने मित्र से कहा कि महाराज प्रत्येक पूर्णिमा को याचकों को दान देते हैं जो याचक सबसे पहले आता है, राजा उसे सौ स्वर्ण मुद्राएँ देते हैं। आज से तीसरे दिन पूर्णिमा है। तुम्हारी राजा के सामने सबसे पहले पहुँचने की व्यवस्था मैं कर दूँगा। इस प्रकार मन्त्री की सहायता से मित्र को सौ मुद्राएँ मिल गईं।

(छ) मन्त्री होने के बावजूद भी वह अपने मित्र की मदद इसलिए नहीं कर सका, क्योंकि उसने राजमन्त्री होते हुए भी अधिक धन एकत्र नहीं किया था।

(ज) व्यापारी मित्र ने मंत्री के पुत्र को शिक्षा दी कि यदि तुम एक-एक ज्ञान को, एक-एक विद्या को और गुण को अपना समझ लो और अपने लिए तथा अपने मित्रों के लिए दिल और दिमाग में रखते जाओ तो छः वर्षों में तुम ज्ञान और गुण के लखपति हो जाओगे।

भाषा-बोध

6. (क) (i) कल्पना + इक, (ख) (iii) सहपाठी (ग) (iii) दरिद्रता।

7. कला — **कलाएँ** कथा — **कथाएँ** लता — **लताएँ**
सुविधा — **सुविधाएँ** पाठशाला — **पाठशालाएँ** योजना — **योजनाएँ**
मुद्रा — **मुद्राएँ** महिला — **महिलाएँ**।

8. (क) मित्र द्वारा दिए गए धोखे के कारण उसकी **आँखें खुल** गईं।
(ख) गरीबी के कारण वह **दाने-दाने का मुहताज** हो गया।
(ग) परीक्षा में फेल हो जाने पर वह **मुँह लटकाकर** घर आ गया।
(घ) वह व्यवसाय में अपने पिता का **हाथ बँटाने** लगा।

9. उन्नति — **प्रगति** मदद — **सहायता** अतिथि — **मेहमान** शिक्षक — **अध्यापक**।

10.
नाना → **माँ के पिता**—देव के नाना मिठाई लाए।
नाना → **अनेक**—मेले में नाना प्रकार के खिलौने थे।
मत → **नहीं**—किसी को धोखा मत दो।
मत → **राय (विचार)**—मेरा मत है कि तुम चुनाव लड़ लो।
लाख → **सौ हजार की संख्या**—रमेश ने दो लाख रुपये की कार ली।
लाख → **धातु; जिससे खिलौने और चूड़ियाँ बनती हैं**—आदिवासी महिलाएँ पैरों में लाख के बने कड़े पहनती हैं।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

क्रियाकलाप

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

7. अपराजिता

पाठ-बोध

1. (क) (i) चन्द्रा, (ख) (iv) 1976 से, (ग) (iii) प्राणिशास्त्र से,
(घ) (i) डॉक्टर बनने की (ङ) (i) शिवानी।

2. प्रस्तुत पंक्ति में लेखिका कहती हैं कि ईश्वर ने हमें भले ही अचानक या अकारण से दण्ड दे दिया हो, परन्तु ईश्वर ने दण्ड के रूप में हमसे हमारे किसी अंग को तो अलग नहीं किया और हमें उससे वंचित नहीं किया।

3. (क) शारीरिक अपंग होते हुए भी उसके धैर्य, उत्साह और परिश्रम को देखकर लेखिका उसे देवांगना कह रही है।

(ख) लेखिका ने 'बित्तेभर की लड़की' डॉ० चन्द्रा को कहा है। उन्होंने उसे यह विशेषण इसलिए दिया क्योंकि वह नियति के दिए कठोर आघात को धैर्य और साहस से झेल रही थी।

(ग) 'बित्तेभर की लड़की' शारीरिक रूप से अपंग थी।

(घ) नियति – **भाग्य**। प्रत्येक – **हर एक**।

4. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✗।

5. (क) कभी-कभी अचानक ही हमें विधाता ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है।

(ख) डॉ० चन्द्रा की गरदन का निचला हिस्सा पोलियो के कारण निर्जीव हो गया।

(ग) डॉ० चन्द्रा के प्रोफेसर ने उनकी माता को 'वीर जननी' इसलिए कहा क्योंकि पच्चीस वर्षों तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ-साथ कठिन साधना की थी।

(घ) डॉ० चन्द्रा को लेखिका ने बित्तीभर की लड़की, साहसी, धैर्यवान आदि विशेषणों से सुशोभित किया।

(ङ) डॉ० चन्द्रा ने माइक्रोबायोलॉजी में डॉक्टरेट, प्राणिशास्त्र में एम०एस०सी०, राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड उपलब्धियाँ अर्जित कीं।

भाषा-बोध

6. (क) लेती हूँ (ख) हुआ (ग) रह गई (घ) गई थीं।

7. सब कुछ जानने वाला – **सर्वज्ञ** जीने की इच्छा – **जिजीविषा**
जिसमें कोई रस न हो – **नीरस** जिसमें जान न हो – **बेजान**।

8. उत्साह – **निरुत्साह** रुचि – **अरुचि** अभ्यास – **पुनः अभ्यास**
जीव – **निर्जीव** मान – **अपमान** जीवन – **पुनर्जीवन**।

9. दण्डित – **पुरस्कृत** कठोरतम – **कोमल** मानव – **दानव**
सजीव – **निर्जीव** दोषी – **निर्दोष** अन्तिम – **आरम्भ**।

10. विलक्षण – **असाधारण, विचित्र** अंतर्यामी – **ईश्वर, भगवान**
द्वार – **प्रवेश मार्ग, दरवाजा** जननी – **माँ, माता**
ख्याति – **प्रसिद्धि, उपाधि** विधाता – **निर्माता, ब्रह्मा**।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

8. प्यार की नींव

पाठ-बोध

1. (क) (i) मौलवी साहब (ख) (iv) करीम (ग) (iii) देवी
(घ) (i) फातिमा बेगम (ङ) (i) यशपाल।

2. (क) मौलवी साहब उस गाँव से लगाव इसलिए करते थे, क्योंकि उसी गाँव में उनका जन्म हुआ था तथा उसी की मिट्टी में खेल-कूदकर वे बड़े हुए थे।

(ख) उनके इकलौते बेटे की मृत्यु हो गई थी और वह उनसे हमेशा के लिए बिछुड़ गया था।

(ग) उन्होंने गाँव में मदरसा खोल दिया था और बच्चों को वे प्यार से पढ़ाते थे, इसलिए गाँव के लोग उन्हें मौलवी साहब कहते थे।

(घ) मौलवी साहब का इकलौता बेटा वहीं उनसे बिछुड़ गया था इसलिए उन्होंने उसकी स्मृति में गाँव के बाहर छोटी-सी यादगार बनवाई।

(ङ) मौलवी साहब ने बेटे की याद में छोटी-सी स्मृति गाँव के बाहर बनवाई।

3. (क) देवी ने मौलवी साहब से वहाँ से चले जाने की मिन्नतें की।

(ख) सांप्रदायिकता की आग भड़कने पर मौलवी साहब को चिंता इसलिए नहीं हुई, क्योंकि वह पहले की तरह बच्चों को प्यार से पढ़ाते थे और गाँव के लोगों से प्यार से पेश आते थे।

(ग) देवी के जोर से रोने का यह कारण था कि एक दिन हरी, लीला और पंचम मौलवी साहब के घर धावा बोलने की सलाह कर रहे थे। देवी मौलवी साहब को वहाँ से जाने की मिन्नतें कर रहा था।

(घ) आहट शांत होने पर मौलवी साहब ने देखा कि धीरे-धीरे दरवाजा खुला और एक के बाद एक तीन लोग भीतर घुस आए।

(ङ) गिरधारी मूर्ति की भाँति इसलिए खड़ा था, क्योंकि मौलवी साहब ने उसे अपनी गोद में खिलाया था और उसे पढ़ाया भी था इसलिए गिरधारी सोच में पड़ गया था।

(च) मौलवी साबह के कथन से गिरधारी मौलवी साहब के पैरों में बैठ गया, पंचम और लीला चारपाई के पास आकर बैठ गए।

(छ) मौलवी साहब ने अत्यन्त सरल भाव से कहा कि गिरधारी, मुझे तो वह दिन याद है जब तुम मेरी गोद में खेले थे और मैंने तुम्हें अपना करीम मानकर पढ़ाया था, लेकिन बेटा मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है। इंसान को अपना कर्त्तव्य करना चाहिए।

(ज) पंचम और लीला चारपाई के पास बैठ गए।

4. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✗, (घ) ✗, (ङ) ✓, (च) ✓।

भाषा-बोध

5. **(क) काटो तो खून न होना**—किसी घटना के कारण बहुत स्तब्ध या दु:खी होना-**प्रयोग**—रोहित के एक्सीडेंट की खबर सुनकर मोहित ऐसा हो गया जैसे काटो तो खून नहीं।

   (ख) सन्न रह जाना—हतप्रभ रह जाना—**प्रयोग**—मौलवी साहब के बेटे की मृत्यु की खबर सुनकर **हरी दंग** रह गया।

   (ग) धावा बोलना—हमला करना-**प्रयोग**—गिरधारी ने मौलवी साहब के घर पर धावा बोल दिया।

   (घ) पैर पड़ना—चरण छूना-**प्रयोग**—गिरधारी ने मौलवी साहब के **पैर पड़े**।

6.

विपरीतार्थक	**पुनरुक्त**
एक-दूसरे	धीरे-धीरे
खा-पीकर	बार-बार
इधर-उधर	भीगी-भीगी
आगे-पीछे	टुकड़े-टुकड़े
छोटे-बड़े	मीठी-मीठी

7. **अपराध**—आजकल शहर में **अपराध** बढ़ता ही जा रहा है।
   प्यार—रोहन अपने माता-पिता से बहुत **प्यार** करता है।
   स्नेह—विराट अपने छोटे भाई से स्नेह रखता है।
   जुर्म—हत्या के **जुर्म** में मनीष को सजा मिली।

8. कलाकार — **कला + कार** क्रोधी — **क्रोध + ई**
   पंजाबी — **पंजाब + ई** हिरणी — **हिरण + ई**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

9. नीति के दोहे

पाठ-बोध

1. (क) (i) मीठे वचन को (ख) (iii) कुमति को
   (ग) (iii) क्षीर-नीर अलग करने से।
2. (क) सभी लोग आत्म-प्रशंसा चाहते हैं।
   (ख) सभी लोग खुद की बड़ाई खुद के मुँह से ही करते हैं।
   (ग) वास्तव में भला व्यक्ति वही है जिसकी सभी लोग सराहना करते हैं।
   (घ) सराहिय — **प्रशंसा करना** सुजन — **सज्जन**।
3. प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि बगुला चाहे अपने पैर, चोंच और आँखों को हंस की तरह ही कर ले और हंस की चाल में चलने भी लगे, किन्तु वह हंस का क्षीर-नीर विवेकी अर्थात् दूध और पानी में अन्तर करने का गुण धारण नहीं कर सकता।

4. (क) मधुर भाषण में इतनी शक्ति होती है कि वह आस-पास के वातावरण को सुखमय बना देता है, यह एक वशीकरण मन्त्र के समान है जो कठोर-से-कठोर वचन बोलने वाले को भी अपने वश में कर लेता है और वह भी मधुर वाणी बोलने लगता है।

(ख) समय रहते ही कार्य पूरा कर लेना चाहिए, क्योंकि जो समय एक बार निकल जाता है वह दोबारा नहीं आता और कार्य अधूरा ही रह जाता है, जिससे बाद में पछताना पड़ता है।

(ग) सुबुद्धि से आशय है—अच्छी बुद्धि, अच्छे विचार रखना और अच्छे काम करना। सुबुद्धि से यह लाभ होता है कि इससे व्यक्ति अनेक प्रकार के सुख प्राप्त कर सकता है, उसके पास विद्या, धन-धान्य की कमी नहीं होती।

(घ) तुलसीदास जी ने मन्त्री, गुरु और वैद्य तीनों को निर्भय होकर अपनी बात बोलने के लिए कहा है, क्योंकि यदि ये तीनों निर्भय होकर नहीं बोलेंगे तो राज, धर्म और तन तीनों का सर्वनाश हो जाएगा।

(ङ) संसार में सबसे बड़ा धर्म परोपकार है तथा दूसरों को पीड़ा पहुँचाना सबसे बड़ा अधर्म है।

5. (क) तुलसी, भाँति-भाँति (ख) चूँकि, पछिताने
(ग) सुमति, सम्पति (घ) कहँ, सुजन
(ङ) धरम, बेगिहीं (च) छीर-नीर, उघरत

भाषा-बोध

6. कठोर — **ओर** लोग — **संजोग** सुखाने — **पछिताने** आस — **नास**
काल — **चाल** निधाना — **नाना** भाई — **अधमाई** सोई — **कोई**

7. दैव — **दैविक** पर — **प्रकार** संसार — **सांसारिक** भय — **भयभीत**।

8. **मन्त्र**—सलाह, देवताओं की आराधना में पढ़ा जाने वाला वाक्य।
नाना—माता के पिता, अनेक।
मन—इच्छा, चालीस किलो की तौल।
गुरु—शिक्षक, बृहस्पति।

9. **नदी-नाव संजोग**—नरेन्द्र मोदी और राहुल गाँधी का मिलना **नदी-नाव संजोग** जैसा है।
का बरषा जब कृषी सुखाने—जब हमें मदद की जरूरत थी तब कोई नहीं आया अब समय बीत जाने के बाद मदद के प्रस्ताव आ रहे हैं। तुलसीदास जी ने ठीक ही कहा है, **का बरसा जब कृषी सुखाने**।
दैव-दैव आलसी पुकारा—आलसी लोग **दैव-दैव आलसी पुकारा** करते रहते हैं और भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं। यह कहावत कर्मठ लोगों पर लागू नहीं होती है।

10. **पीपर पात** — उपमान **मन** — उपमेय
सरिस — वाचक शब्द **डोला** — साधारण धर्म

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

10. सच्चा तीर्थयात्री

पाठ-बोध

1. (क) (iv) यरुशलम (ख) (i) रूस के
(ग) (iii) तीर्थयात्रा से (घ) (ii) एलिशा।

2. यह वाक्य एफिम ने एलिशा से कहा क्योंकि वह तीर्थयात्रा का वास्तविक अर्थ समझ गया था कि केवल शरीर के वहाँ पहुँचने से तीर्थयात्रा नहीं होती। सच्चे मन और आत्मा से मानव सेवा करने से ही तीर्थयात्रा होती है।

3. (क) तीर्थयात्रा पर जाने के लिए एलिशा ने अपने मित्र एफिम से कहा कि आत्मा की पवित्रता से बढ़कर और कुछ नहीं होता। तीर्थयात्रा से आत्मा पवित्र होती है। हमने तीर्थयात्रा की प्रतिज्ञा की है, इसलिए हमें अवश्य चलना चाहिए। इस तरह एलिशा ने एफिम को तीर्थयात्रा पर चलने के लिए राजी किया।

(ख) एफिम और एलिशा बड़े घनिष्ठ मित्र थे। एफिम गंभीर और विचारवान व्यक्ति था। वह अपने परिवार की देखभाल बड़े ध्यान से करता था। एलिशा न ही धनवान था और न ही निर्धन। वह मधुमक्खियाँ पालकर अपना और अपने परिवार का पेट पालता था। वह बड़ा दयालु और प्रसन्नचित व्यक्ति था।

(ग) एलिशा ने रास्ते में अकाल-पीड़ित गाँव के मरणासन्न परिवार की सहायता के लिए अपने थैले में से रोटी का एक टुकड़ा लड़के को दिया, उसने स्त्री और पुरुष को भी दो-दो रोटियाँ खाने को दी। कुएँ से पानी लाकर उन्हें पिलाया, पूरी रात उन तीनों की देखभाल की और अगले दिन सुबह को झोंपड़ी की सफाई की, चूल्हा जलाया, भोजन बनाया, दूध के लिए गाय खरीदी और खेत जोतने के लिए घोड़ा खरीदा। अगली फसल तक उनके लिए अनाज खरीदकर रख दिया।

(घ) अकाल-पीड़ित गाँव से जब एफिम ने यात्रा पर जाने के लिए एलिशा से कहा तो उसने कहा कि मित्र, आप चलें। मैं इन लोगों को ऐसी दशा में छोड़कर नहीं जा सकता। मुझे कुछ समय तक इन लोगों की सेवा करनी होगी।

(ङ) एक दिन एलिशा ने सुना कि बूढ़ी स्त्री अपने बेटे से कह रही थी, 'बेटा यह मनुष्य नहीं देवदूत है।' ऐसे भले मनुष्य संसार में अधिक नहीं हैं। एलिशा ने जब अपनी प्रशंसा के ये शब्द सुने तो उसने सोचा कि मुझे यहाँ से चल देना चाहिए और जब वे लोग गहरी नींद में सो रहे थे तो वह चुपचाप वहाँ से चल पड़ा।

(च) एफिम गिरजाघर के भीतरी भाग में एलिशा की तरह के एक वृद्ध व्यक्ति को देखकर हैरान रह गया।

(छ) एफिम ने सच्ची तीर्थयात्रा का अर्थ इस प्रकार समझा कि केवल शरीर के वहाँ पहुँचने से ही तीर्थयात्रा नहीं होती। सच्ची तीर्थयात्रा मानव-सेवा और दीन-दुखियों की मदद करने से होती है।

4. (क) ✗, (ख) ✓, (ग) ✓, (घ) ✓, (ङ) ✗, (च) ✗।

भाषा-बोध

5. **बाहर**—मन्दिर के **बाहर** भण्डारा चल रहा है।
   धीरे-धीरे—**धीरे-धीरे** एलिशा की सेवा से उन तीनों प्राणियों में शक्ति आ रही थी।
   चुपचाप—तीनों लोग सो रहे थे, एलिशा **चुपचाप** चल पड़ा।
   टटोलकर—रोहित ने अपने पैसे **टटोलकर** ढूँढ लिए।
   आगे—एफिम जेब पर हाथ रखकर **आगे** बढ़ा।
6. **वातावरण**—मेरठ में शान्त वातावरण है।
   पर्यावरण—पेड़-पौधे लगाकर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाएँ।
   प्रणाम—हमें अपने से बड़ों को प्रणाम करना चाहिए।
   परिणाम—कक्षा सात का परिणाम कब आएगा?
   आयु—राहुल की आयु तीस वर्ष है।
   अवस्था—समोसा खाने से सुशील की अवस्था में सुधार हुआ।
   श्रद्धा—रोहित ने गरीबों की मदद श्रद्धा से की।
   भक्ति—हमें भगवान की भक्ति करनी चाहिए।
7. विचार — **विचारवान** पवित्र — **पवित्रता**
   दुर्गन्ध — **दुर्गन्धपूर्ण** धन — **धनवान**
   प्रसन्न — **प्रसन्नता** दया — **दयावान**।
8. **पुनरुक्त शब्द-युग्म**—धीरे-धीरे, एक-एक।
   समानार्थक शब्द-युग्म—चीख-पुकार, दीन-दुःखी।
9. सूखा — **बाढ़** रात — **दिन** धनी — **निर्धन** प्रसन्न — **खिन्न**
   प्रशंसा — **निंदा** मित्र — **शत्रु** दुर्गन्ध — **खुशबू** पवित्र — **अपवित्र**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

11. तीर्थयात्रा

पाठ-बोध

1. (क) (i) हेमराज (ख) बरतन (ग) (ii) मदन
   (घ) (iii) मुल्तान में (ङ) (iii) हरो का।
2. (क) लाजवंती को अपने पुत्र की चिंता इसलिए रहती थी, क्योंकि उसके यहाँ कई पुत्र पैदा हुए थे, लेकिन सब-के-सब बचपन में ही मर गए थे। आखिरी पुत्र हेमराज उसके जीवन का सहारा था।
   (ख) हेमराज साधारण बच्चों की तरह ही था, लेकिन लाजवंती की नजर में उस जैसा बालक पूरे संसार में नहीं था। उसे देखकर वह पहले बच्चों का दुःख भूल जाती थी।
   (ग) इस कहानी के लेखक बद्रीनाथ शर्मा (श्री सुदर्शन) हैं।

(घ) **दीपक बुझना**—रमेश के घर का आखिरी दीपक भी बुझ गया।
छाती से लगाकर रखना—सुशील अपने बेटे को हमेशा छाती से लगाकर रखता है।

3. (क) गाँव की स्त्रियाँ लाजवंती को सांत्वना देती हुई कहती हैं कि 'हमारे भी तो बच्चे हैं, तू जरा-जरा सी बात में इस तरह पागल क्यों हो जाती है?''

(ख) गाँव वाले दुर्गादास वैद्य को लुकमान इसलिए समझते थे, क्योंकि सैंकड़ों रोगी उनके हाथों से स्वस्थ होते थे।

(ग) माँ हरो इसलिए रो रही थी, क्योंकि उसे कुँवारी बेटी का दु:ख खा रहा था। उसके ब्याह का खर्च तो लाजवंती के जेठ ने उठा लिया था, लेकिन बारात के लिए खाने का प्रबन्ध नहीं हुआ था।

(घ) तीर्थयात्रा के लिए अपना संचित धन माँ हरो को देते हुए लाजवंती प्रसन्न थी, क्योंकि दूसरों की भलाई करने को ही वह सच्ची तीर्थयात्रा मानती थी।

(ङ) छात्र स्वयं करें।

4. (क) ✓, (ख) ✓, (ग) ✗, (घ) ✗, (ङ) ✗, (च) ✓।

5. (क) हेमराज, (ख) दुर्गादास, (ग) मुल्तान,
(घ) थककर, मुखमंडल (ङ) आरती, परिक्रमा, (च) तीर्थयात्रा।

भाषा-बोध

6. भगवान — **ईश्वर, प्रभु** कोप — **क्रोध, रोष** संकट — **शोक, कष्ट**
कृतज्ञ — **कृतकार्य, कतज्ञता** आनंद — **हर्ष, उल्लास** पाषाण — **पत्थर, प्रस्तर**
अपमान — **अनादर, तिरस्कार** ।

7. नजर — **दृष्टि** सख्त — **दृढ़** बुखार — **ज्वर**
तरफ — **ओर** आखिरी — **अंतिम** जरूर — **आवश्यक**
मियाद — **समय** आवाज — **पुकार**।

8. जीवन — **मृत्यु** भय — **निर्भय** हानिकारक — **लाभदायक**
सावधान — **असावधान** आशा — **निराशा** स्वस्थ — **अस्वस्थ**
मान — **अपमान** धैर्य — **अधैर्य** कृतज्ञ — **कृतघ्न**
आवश्यक — **अनावश्यक**।

9. (i) वह भी इसी तरह बीमार हुआ था।
(ii) हेमराज का रंग-रूप साधारण बालकों जैसा ही था।
(iii) बुखार धीरे-धीरे उतर रहा है।
(iv) हरो सिसकियाँ भर-भरकर रोने लगी।

10. फन — **सूँड** जलील — **पूज्य** फ़न — **हुनर** ज़लील — **बेशर्म**

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

12. काबुलीवाला : पितृप्रेम

पाठ-बोध

1. (क) (i) रामदयाल, (ख) (ii) सड़क के, (ग) (i) फेरीवाला
(घ) (iii) रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

2. (क) मिनी की माँ ने मिनी से कहा क्योंकि काबुली वाले ने वह अठन्नी मिनी की झोली में डाल दी थी।
(ख) रहमत ने मिनी से कहा क्योंकि छुरा चलाने के कसूर में उसे कई साल की सजा हो गई थी और पुलिस ने उसके हाथ-पैर बाँध रखे थे।
(ग) रहमत ने मिनी के बाबूजी से कहा क्योंकि रहमत मिनी के लिए अंगूर, किशमिश और बादाम लाया था और मिनी के बाबूजी उसके पैसे दे रहे थे।

3. (क) रहमत मिनी से मिलने के लिए गया था।
(ख) मिनी के बाबूजी ने उसे कहा "आज घर में बहुत काम है। आज किसी से मुलाकात न हो सकेगी।" यह जवाब सुनकर रहमत उदास हो गया था।
(ग) मिनी के बाबूजी के हृदय में वेदना इसलिए उठी, क्योंकि उन्होंने उसे मिनी से मिलने से मना कर दिया था।
(घ) रहमत बच्ची के लिए अंगूर, बादाम और किशमिश लाया था, उन्हें देने के लिए वापस आया था।

4. (क) रहमत काबुलीवाला था। वह अपना देश छोड़कर हर साल मेवा बेचने कलकत्ता के गली कूचों में आता था।
(ख) मिनी की झोली में अठन्नी रहमत ने डाल दी थी।
(ग) काबुलीवाला रोज आता रहा और पिस्ता-बादाम की रिश्वत दे-देकर मिनी के हृदय पर उसने अधिकार जमा लिया था।
(घ) लेखक ने मिनी के विवाह की बात इसलिए नहीं बताई, क्योंकि रहमत छुरा चलाने के कसूर में जेल चला गया था और लेखक के दिमाग से उसका ख्याल बिल्कुल निकल गया था।
(ङ) रहमत ने अपने कुर्ते की जेब से मैला कुचैला कागज का टुकड़ा निकाला। देखा कि कागज पर एक नन्हें-से हाथ के छोटे-से पंजे की छाप है। अपनी लड़की की इस याददाश्त को छाती से लगाकर रहता था। उसकी यह बात सुनकर लेखक का हृदय द्रवित हो गया और काबुलीवाला उसे एक पिता नजर आने लगा।

5. (क) सड़क (ख) दरबान (ग) काबुलीवाला, पिस्ता-बादाम
(घ) महीने, रहमत (ङ) छुरा, कसूर।

6. (क) ✗, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✗, (ङ) ✓, (च) ✓।

भाषा-बोध

7. उदास-सा — **कुछ उदास** नन्हा-सा — **कुछ नन्हा**
थोड़ा-सा — **कुछ थोड़ा** छोटी-सी — **कुछ छोटी**।

8. बादाम-किशमिश — **बादाम और किशमिश** पिस्ता-बादाम — **पिस्ता और बादाम**
पढ़ने-लिखने — **पढ़ने और लिखने** इधर-उधर — **इधर और उधर**
जेवर-गहने — **जेवर और गहने** दो-चार — **दो और चार**।

9. लड़की — **लड़कियाँ** अठन्नी — **अठन्नियाँ** खिड़की — **खिड़कियाँ**
शहनाई — **शहनाइयाँ** पिटारी — **पिटारियाँ** बच्ची — **बच्चियाँ**
झोली — **झोलियाँ** रोशनी — **रोशनियाँ** खुबानी — **खुबानियाँ**
ऋतु — **ऋतुएँ**।

10. आकाश — **आसमान, अम्बर** हाथी — **गज, कुंजर** घर — **गृह, आवास**।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें। ❑

13. जय भारती!

पाठ-बोध

1. (क) (iii) ताकत (ख) (iii) प्रत्येक मनुष्य के
(ग) (iv) 'नई' से (घ) (ii) डॉ० रामकुमार वर्मा।

2. (क) कवि इसके गौरव की गाथाएँ मधुमय मन पर लहराना चाहता है।
(ख) मधुमय से तात्पर्य सुन्दर मन से है।
(ग) इस कविता के रचयिता का नाम डॉ० रामकुमार वर्मा है।
(घ) उपर्युक्त पद्यांश में 'इसके' शब्द माँ भारती के लिए आया है।

3. प्रेम शांति **की दो धाराएँ,**
मन की सीमा पर मिल जाएँ,
सारा जग **इस पुण्य भूमि की**
सदा उतारे आरती
जय भारत! जय भारती।

4. (क) इस कविता द्वारा कवि माँ भारती की जय-जयकार कर रहा है।
(ख) नई शक्ति लोगों के मन में नई-नई भक्ति उभारती है।
(ग) कवि प्रेम शान्ति की धाराओं को मन की सीमा पर मिलाना चाहता है।
(घ) कवि सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् स्वर से सबको सँवारना चाहता है, क्योंकि इन स्वरों के द्वारा ही हमारा मन स्वच्छ और स्वस्थ होता है।

5.

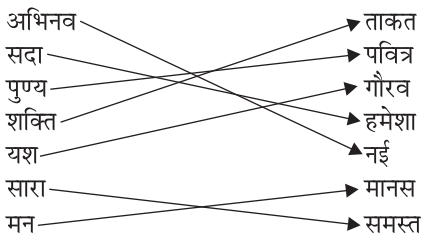

भाषा-बोध

6. **अभिनव**—अ + भ् + इ + न् + अ + व् + अ
भक्ति—भ् + अ + क् + त् + इ
आरती—आ + र् + अ + त् + ई
गौरव—ग् + औ + र् + अ + व् + अ
मधुमय—म् + अ + ध् + उ + म् + अ + य् + अ।

7. जग — **संसार, जगत** भूमि — **पृथ्वी, धरा**
सदा — **नित्य, सर्वदा** नई — **नवीन, नव्य**।

8. प्रेम — **घृणा** शान्ति — **अशान्ति**
सत्य — **असत्य** सुंदर — **कुरूप**।

9. छात्र स्वयं पढ़ें।

10. नई-पुरानी — **नई और पुरानी** धनी-निर्धन — **धनी और निर्धन**
ऊपर-नीचे — **ऊपर और नीचे** भला-बुरा — **भला और बुरा**
जीवन-मरण — **जीवन और मरण**।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

14. प्रायश्चित

पाठ-बोध

1. (क) (i) कबरी बिल्ली से (ख) (iii) दूध
(ग) (iv) रामू की बहू ने (घ) (i) परमसुख चौबे
(ङ) (i) भगवतीचरण वर्मा।

2. (क) कबरी रामू की बहू को उठता देख वहाँ से खिसक गई।
(ख) रामू की बहू कुछ सोचकर मुस्करा रही थी।
(ग) लकड़ी के कटे एक टुकड़े (थपकी) को पाटा कहते हैं।
(घ) बिल्ली रामू की बहू के घर में प्रसन्न इसलिए रहती थी, क्योंकि उसे कुछ-न-कुछ खाने-पीने का अवसर मिलता रहता था।

3. (क) छात्र स्वयं करें।
(ख) रामू की बहू का कबरी बिल्ली से यह बैर था कि रामू की बहू कुछ भी खाने-पीने का सामान रखती थी तो मौका देखते ही कबरी उसे साफ कर जाती थी।
(ग) रामू की बहू ने खीर में पिश्ता, बादाम, मखाने और तरह-तरह के मेवे डाले।
(घ) खीर का भरा कटोरा कमरे में ऊँचे ताक पर रखा गया, बिल्ली ने कटोरा देखा, छलाँग लगाई, पंजा कटोरे में लगा। कटोरा झनझनाहट की आवाज के साथ फर्श पर गिर गया।
(ङ) रामू की बहू ने पाटा लेकर बिल्ली पर पटक दिया, बिल्ली न हिली, न डुली, न चिल्लाई सीधा पलट गई, उसने मरने का स्वांग रचा।

(च) पंडित परमसुख ने बिल्ली की हत्या का प्रायश्चित यह बताया कि एक सोने की बिल्ली बनवाकर बहू से दान करवा दी जाए।

4. (क) कबरी, रामू (ख) आफत, छक्के-पंजे
(ग) खबर, पड़ोस (घ) परमसुख, मोटे-से
(ङ) इक्कीस दिन, इक्कीस, इक्कीस, भोजन।

भाषा-बोध

5. (क) सकर्मक, एककर्मक (ख) सकर्मक, द्विकर्मक
(ग) अकर्मक (घ) अकर्मक (ङ) अकर्मक।

6. दुश्वार, मुस्कराते, जिन्दा, मुश्किल, पंडित।

7. बालक — **बालिका** पंडित — **पंडिताइन** बेटा — **बेटी**
चूहा — **चुहिया** पति — **पत्नी** महाराज — **महारानी**
नौकर — **नौकरानी** अपराधी — **अपराधिनी**।

8. बिल्ली — **बिल्लियाँ** बिजली — **बिजलियाँ** कटोरी — **कटोरियाँ**
अंगुलि — **अंगुलियाँ** झिड़की — **झिड़कियाँ** सामग्री — **सामग्री**
ऊँचाई — **ऊँचाइयाँ** बालिका — **बालिकाएँ** देहरी — **देहरियाँ**
बहू — **बहुएँ**।

9. दूध — **दुग्ध** सिर — **शिर** बहू — **वधु**
घर — **गृह** खीर — **क्षीर** नरक — **नर्क**
कान — **कर्ण** मुँह — **मुख** हाथ — **हस्त**
साँस — **श्वांस**।

10. घर — **गृह, आलय, निवास**। पंडित — **ज्ञानी, विद्वान, कोविद**।
आँख — **नयन, चक्षु, लोचन**।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

15. नमक का महत्त्व

पाठ-बोध

1. (क) (iii) तीसरी लड़की ने (ख) (ii) समुद्र
(ग) (ii) नमक (घ) (i) राज्य।

2. (क) अनन्त, सोने (ख) समुद्र, मूल्यवान (ग) नमक
(घ) सोने, जवाहरातों (ङ) दण्ड (च) अनुभव, नमक।

3. (क) राजा को वही लोग पसन्द थे, जो हमेशा उसकी प्रशंसा करते रहते और सदा उसकी बातों पर विश्वास करते थे।

(ख) राजा को अपनी बुद्धि, सफलता, अपने आकर्षक व्यक्तित्व तथा बड़ा शासक होने पर गर्व था।

(ग) राजा ने अपनी बेटियों से जानना चाहा कि उसकी तीनों बेटियाँ उससे कितना प्यार करती हैं और उसके बारे में कैसा विचार रखती हैं।

(घ) अपनी तीसरी लड़की पर राजा इसलिए क्रोधित हुआ, क्योंकि उसने राजा के प्रति अपने प्यार को साधारण नमक की तरह बताया था।

(ङ) राजकुमारी जब अपने पिता को खाना परोसने पहुँची तो उसने घूँघट निकाला जिससे उसके पिता उसको पहचान न सकें।

(च) (i) राजकुमारी झूठी प्रशंसा करने में विश्वास नहीं करती थी।

(ii) वह किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहती थी।

(iii) वह बहादुर और चतुर थी।

(iv) वह अपने प्यार और सम्मान की कीमती चीजों से तुलना नहीं करती है।

(v) उसे जो मिल जाता था उसी में सन्तुष्ट रहती थी।

4. (क) यह वाक्य तीसरी लड़की ने राजा से कहा।

(ख) यह वाक्य राजा के उस प्रश्न के उत्तर में कहा गया जिसमें राजा ने पूछा था कि वह अपने पिता से कितना प्यार करती है।

(ग) छात्र स्वयं करें।

भाषा-बोध

5. करन और अर्जुन दो भाई थे। **उनके** पिता की अच्छी खेतीबाड़ी थी। **उन्होंने** बड़े लाड़-प्यार से **अपने** बेटों को पाला। **वह** चाहते थे कि दोनों पढ़-लिखकर विद्वान बनें। करन का पढ़ने में मन नहीं लगता, **वह** आलसी भी था। छोटा भाई अर्जुन परिश्रमी था और पढ़ने में भी तेज था। पढ़ाई में **उसकी** रुचि देखकर पिता ने **उसे** विद्या पाने काशी भेजा और खेतीबाड़ी का काम करन पर सौंपा।

कई वर्ष बीत गए, एक दिन उनके बूढ़े पिता बीमार पड़ गए। अन्तिम साँस लेने से पहले **उन्होंने** करन से कहा, ''बेटा करन! अर्जुन को पढ़ाई पूरी करने देना। **मैं** चाहता हूँ कि **वह** एक महान् विद्वान बने। पढ़ाई में कोई कमी न आने देना। यही मेरी प्रार्थना है। भगवान **तुम्हें** सुखी रखे।''

6. **ममता** – माँ की ममता अतुलनीय है।

कोमलता—नाई ने सुशील के कन्धे कोमलता से दबाए।

बचपन—रोहित और विराट बचपन के मित्र हैं।

सादगी—गाँधी जी की सादगी से सभी लोग प्रभावित थे।

कड़वाहट—राजा के मन में अपनी छोटी बेटी के प्रति बहुत कड़वाहट भरी थी।

बुढ़ापा—संजय को बुढ़ापा आ गया है।

ऊँचाई—जीवन में ऊँचाई पर पहुँचने के लिए परिश्रम करना पड़ता है।

महानता—राजा ने अपनी महानता से प्रजा की मदद की।

7.

ख	ट	मी	ठा	भि	क	ले
ट्	ष	प	ध	हा	सै	ख
टा	ट	फी	का	पी	ला	गा
च	घा	र	ट	प्	शू	मी
छै	न	म	की	न	की	ठा
स्	थ	रा	फि	खौ	टा	प्र
ती	खा	तू	क	ड़	वा	स

नमकीन
खट्टा
मीठा
कड़वा
तीखा
कसैला

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑

16. मजदूरी और प्रेम

पाठ-बोध

1. (क) (i) गुरु नानक जी ने (ख) (iv) हल-बैलों को
(ग) (ii) किसान को (घ) (iv) सरदार पूर्ण सिंह।

2. (क) ब्रह्मा (ख) साधु (ग) आदमियों
(घ) आनंद (ङ) ऐश्वर्य (च) आध्यात्मिक।

3. (क) लेखक को सच्चा आनन्द उसके काम में मिलता है, वह कहता है कि सोने और चाँदी से आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती।
(ख) मनुष्य-पूजा ही सच्ची ईश्वर पूजा है।
(ग) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का नाम मजदूरी और प्रेम तथा लेखक का नाम सरदार पूर्ण सिंह है।
(घ) स्वर्गप्राप्ति का समास विग्रह- स्वर्ग की प्राप्ति है तथा इसमें तत्पुरुष समास है।

4. (क) किसान की चारित्रिक विशेषताएँ हैं— वृक्षों की तरह उसका भी जीवन एक प्रकार का मौन जीवन है। केवल साग-पात खाकर ही यह अपनी भूख निवारण कर लेता है। प्रात:काल उठकर यह अपने हल-बैलों को नमस्कार करता है और खेत जोतने चल देता है। यह किसी को धोखा नहीं देता।
(ख) किसान की तुलना ब्रह्मा से की गई है, क्योंकि खेती उसके ईश्वरी प्रेम का केन्द्र है। कहते हैं ब्रह्माहुति से जगत पैदा हुआ है और किसान अन्न पैदा करता है।
(ग) लेखक को जब फकीर के दर्शन होते हैं तो वह महसूस करता है कि नंगे सिर, नंगे पाँव, एक टोपी सिर पर, एक लँगोटी कमर में, एक काली कमली कंधे पर, एक लम्बी लाठी हाथ में लिए हुए गौवों का मित्र, बैलों का हमजोली, पक्षियों का हमराज, महाराजाओं का अन्नदाता, बादशाहों को ताज पहनाने और सिंहासन पर

बिठाने वाला, भूखों और नंगों को पालने वाला, समाज के पुष्पोधान का माली और खेतों का रखवाला जा रहा है।

(घ) होटल में बने भोजन नीरस इसलिए होते हैं, क्योंकि वहाँ मनुष्य मशीन बना दिया जाता है।

(ङ) मुँह, हाथ, पाँव इत्यादि का गढ़ देना साधारण मजदूरी, परंतु मन के गुप्त भावों और अंत:करण की कोमलता तथा जीवन की सभ्यता को प्रत्यक्ष प्रकट कर देना प्रेम-मजदूरी है।

(च) मजदूरी करने से हृदय पवित्र होता है, संकल्प दिव्य लोकान्तर में विचरते हैं। हाथ की मजदूरी से ही सच्चे ऐश्वर्य की उन्नति होती है।

5. (क) ✓, (ख) ✓, (ग) ✗, (घ) ✗, (ङ) ✗, (च) ✓।

6.

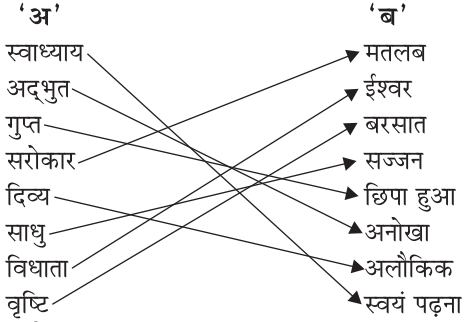

भाषा-बोध

7. बैठना – **बिठाना, बिठवाना** बेचना – **बिकाना, बिकवाना**
धोना – **धुलाना, धुलवाना** देना – **दिलाना, दिलवाना**
करना – **कराना, करवाना**

8. किसान – **कृषक** सोना – **स्वर्ण** पात – **पत्ता** खेत – **क्षेत्र**
हाथ – **हस्त** लकड़ी – **लागुड़** काम – **कर्म** सिर – **शिर**
पाँव – **पाद** कागज – **पन्ना**।

9. दर्शन – **दार्शनिक** संसार – **सांसारिक** चिंतन – **चिंतनीय**
समाज – **सामाजिक** परिवार – **पारिवारिक** प्रकृति – **प्राकृतिक**
आदर – **आदरणीय** अध्यात्म – **आध्यात्मिक**।

10. हवा – **पवन, वायु** जगत – **संसार, विश्व** जल – **पानी, नीर**
पृथ्वी – **धरती, धरा** आकाश – **अम्बर, आसमान**
वृक्ष – **पेड़, विटप** जंगल – **वन, अरण्य**।

ज्ञान-बोध

❖ छात्र स्वयं करें।

❑